पी एच डी उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध की रुपरेखा

" तोड़ो कारा तोड़ो : जीवन दर्शन और उसकी समकालीन प्रासंगिकता (नरेन्द्र कोहली के विवेकानंद के जीवनी मूलक उपन्यास के छह खण्ड)"

"Todo Kara Todo : Jiwan Darshan Aur Uski Samkalin Prasangikta (Narendra Kohli Ke Vivekanand Ke Jiwani Mulak Upanyas Ke Chha Khand)"

Todo Kara Todo : Life philosophy and its contemporary relevance (In the six volumes of the biographical novel by Narendra Kohli)

PRESIDENCY UNIVERSITY
KOLKATA

हिन्दी विभाग
प्रेसीडेन्सी विश्वविद्यालय, कोलकाता (प ब)

शोध निर्देशक
सहायक प्राध्यापक डॉ अनिन्द्य गंगोपाध्याय

शोधार्थी
किरीट देबनाथ

✤ शोध का क्षेत्र -
(Area of Research / Introduction)

मेरे शोध का क्षेत्र हिन्दी गद्य साहित्य की उपन्यास विधा है। जिसके अंतर्गत हिन्दी साहित्य के प्रख्यात रचनाकार नरेंद्र कोहली द्वारा स्वामी विवेकानन्द के जीवन पर छह खण्डों में लिखी गई औपन्यासिक जीवनी (fictional biography) को मैंने अपने शोध का विषय बनाया है। इस शोध में जीवन दर्शन एवं उसकी समकालीन प्रासंगिकता मेरा क्षेत्र है। दर्शन शब्द का शाब्दिक अर्थ देखना होता है। इस प्रकार जीवन दर्शन का अर्थ हुआ जीवन को व्यापक स्तर पर देखना। दर्शन का क्षेत्र अत्यधिक व्यापक है। ज्ञान का कोई भी क्षेत्र, कोई भी शाखा दर्शन की शाखा बन जाती है, जब विचारक उस पर दार्शनिक दृष्टिकोण से विचार करने लगते हैं। वास्तविकता तो यह है कि जीवन और जगत का कोई भी ऐसा पहलू नहीं है जिसमें दर्शन की प्रासंगिकता न हो। व्यवहारिक जीवन, सामाजिक जीवन, राजनैतिक जीवन, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, नैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन, शिक्षा जगत, सम्पूर्ण भौतिक, अभौतिक जगत दर्शन से संगति रखते हैं। दर्शन के बिना सम्पूर्ण मानव जीवन ही असंभव है। जैसा कि प्रसिद्ध पाश्चात्य दार्शनिक प्लेटो का मत है, "दर्शन का उद्देश्य वस्तुओं के शाश्वत अथवा मूल स्वरुप का ज्ञान कराना है।" प्रसिद्ध दार्शनिक डॉ० राधाकृष्णन के अनुसार "दर्शन यथार्थता या परम सत्ता के स्वरुप का तार्किक अध्ययन है।" इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतीय दृष्टिकोण अपनी संस्कृति के समन्वयात्मक और व्यापक दृष्टिकोण को दर्शन के क्षेत्र में भी पूर्णतः अपनाता है।

भारतीय दर्शन से अभिप्राय भारतीय उपमहाद्वीप में प्रचलित प्राचीन दार्शनिक परम्परा से है। प्रधान दार्शनिक सम्प्रदायों का विभाजन इन दो भागों में किया जा सकता है यथा आस्तिक और नास्तिक। आस्तिक और नास्तिक विचारधाराएँ इस बात पर निर्भर करती हैं कि सम्प्रदाय वेदों को ज्ञान के प्रामाणिक स्रोत के रूप में विश्वास करता है या नहीं, ब्रह्म और आत्मा पर विश्वास करता है , मृत्यु के बाद भी जीवन का अस्तित्व है या जीवन वहीं समाप्त हो जाता है। हिन्दू दर्शन के छह प्रधान भाग इस प्रकार हैं - १. न्याय २. वैशिशीका ३. सांख्य ४. योग ५. मीमांसा। पांच नास्तिक वर्ग हैं - १. जैन २. बौद्ध ३. अजीवक ४. अजनान ५. चार्वाक । हम जानते हैं कि भारत संत महात्माओं की भूमि रही है जिन्होंने समय-समय पर अज्ञानता, जाति भेद आदि कुसंस्कार का खण्डन करते हुए न केवल भारत बल्कि विश्व मंगल या विश्व के कल्याण की कामना की है और संसार में एक ज्ञानालोक जगाने का प्रयास किया है ताकि संसार में नवीन चेतना जाग्रत हो सके। उदाहरणतया स्वामी दयानन्द सरस्वती (पण्डित मूलशंकर तिवारी), एकनाथ, वल्लभाचार्य, रामानन्द, कबीर, अखण्डमण्डलेश्वर श्री-श्री स्वामी स्वरूपानन्द परमहंसदेव आदि महापुरुषों की वाणी में जगत कल्याण हेतु अज्ञानता व संकीर्णता के कारागार को तोड़ने की बात कही गयी है। इन्हीं समस्त सन्त महात्माओं में स्वामी विवेकानंद भी एक हैं जिन्होंने उस तमसावृत कारागार को तोड़ते हुए मानव जाति के कल्याण और उनमें समानता की बात कही है।

हिंदी के प्रख्यात कथाकार नरेंद्र कोहली एक कालजयी उपन्यासकार हैं जिन्होंने विविध महाकाव्यों को लेकर उपन्यासों की रचना की है। वे आधुनिक हैं किन्तु पुरातनपंथी नहीं हैं। वे भारतीयता की जड़ों तक पहुँचने का प्रयास करते हैं। यह तो हम जानते ही हैं कि उन्होंने पौराणिक कथाओं को लेकर उपन्यास लिखे हैं जो साहित्य में एक नया दौर प्रतीत

होता है। साथ ही साथ उन्होंने स्वामी विवेकानंद को लेकर जो सात उपन्यास लिखें हैं "तोड़ो कारा तोड़ो" (भाग १-६) तथा "न भूतो न भविष्यति" जिसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि हिन्दी साहित्य में महापुरुषों की जीवनगाथा को लेकर एक नयी धारा की शुरुआत हो चुकी है। आधुनिक भारतीय साहित्य में इस प्रकार की रचनाओं की बाढ़ आ गई है।"तोड़ो कारा तोड़ो" शीर्षक रवीन्द्रनाथ ठाकुर के गीत की एक पंक्ति का अनुवाद है; किन्तु उपन्यास का संबंध विवेकानंद की जीवनकथा से है जिसमें विवेकानन्द का जीवन बंधनों तथा सीमाओं के अतिक्रमण का बेमिसाल उदहारण है। स्वयं लेखक के शब्दों में " स्वामी विवेकानंद के व्यक्तित्व का आकर्षण, आकर्षण नहीं, जादू.. जादू जो सिर चढ़कर बोलता है। कोई संवेदनशील व्यक्ति उनके निकट जाकर सम्मोहित हुए बिना नहीं रह सकता। उन्हें किसी एक युग, प्रदेश, सम्प्रदाय अथवा संगठन के साथ बाँध लेना अज्ञान भी है और अन्याय भी है।"

इस वृहद उपन्यास का पहला खण्ड 'निर्माण' जिसमें स्वामी विवेकानन्द के व्यक्तित्व निर्माण के विभिन्न आयामों को दर्शाया गया है। इसका क्षेत्र जन्म से लेकर श्रीरामकृष्ण परमहंस तथा जगन्माता भवतारिणी के सम्मुख निर्द्वंद्व आत्मसमर्पण तक की घटनाओं पर आधारित है।

दूसरे खण्ड 'साधना' में अपने गुरु के पास बैठकर की गई विवेकानन्द की साधना का वर्णन है जहाँ उन्हें निर्विकल्प समाधि आदि की जानकारी मिलती है। गुरु के देह-त्याग के पश्चात उनके आदेशानुसार, अपने गुरुभाइयों को एक मठ में संगठित करने की कथा है।

तीसरे खण्ड 'परिव्राजक' में एक अज्ञात सन्यासी के रूप में कलकत्ते से द्वारिका तक स्वामी विवेकानन्द के भ्रमण की कथा है।

चौथे खण्ड 'निर्देश' में सागर-तट पर बैठकर स्वामी विवेकानन्द ने भारत माता की दुर्दशा पर अश्रु बहाए थे। वे एक नया संकल्प लेकर उठे और विभिन्न देशी राज्यों और रजवाड़ों में से होते हुए कन्याकुमारी पहुँचे, जहाँ उन्होंने अपनी तीन दिनों की समाधि में जगदंबा और भारत माता के एक साथ दर्शन किए। उसके बाद वे मद्रास पहुँचे। मद्रास में नवयुवकों के एक संगठित दल ने उन्हें अमेरिका के शिकागो में होने वाली धर्मसंसद में भेजने का निश्चय किया और उसके लिए तैयारी आरम्भ कर दी।

पाँचवें खण्ड 'संदेश' में स्वामी विवेकानंद जो सन्देश सारे विश्व को देना चाहते थे, वह इस खण्ड में घनीभूत रूप से चित्रित है। इस खण्ड में चित्रित घटनाएँ १८९४ ई के अन्त तक चलती हैं। ये सारी घटनाएँ अमेरिका की हैं और इनमें स्वामी के आस-पास के सारे पात्र अमेरिकी हैं। इस काल में स्वामी एक भारतीय सन्यासी के रूप में न केवल अपने अमरीकी शिष्यों को बिना कोई शुल्क लिए भारतीय पद्धति से आध्यात्म पढ़ा और सिखा रहे थे वरन् अमरीकी सन्यासी भी तैयार कर रहे थे।

ग्रीनेकर रिलीजस कांफ्रेंस टेंडरलोयन की ३३वीं वीथि में स्वामी की कक्षाएँ तथा सहस्त्रद्वीपोद्यान में वेदान्त का शिक्षण आदि अनेक महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं जिनसे भारतीय संस्कृति के बारे में जान पड़ता है। सम्भवतः इसमें स्वामी विवेकानन्द का बहुत्ववादी धर्म चिन्तन व दर्शन (plurarism) प्रतिभात होता है।

छठा खंड 'प्रसार' कथा की दृष्टि से अगस्त १८९५ ई से जुलाई १८९६ तक की घटनाओं का वर्णन है। न्यूयॉर्क से पेरिस, पेरिस से लंदन, लंदन से न्यूयॉर्क और न्यूयॉर्क से पुनः लंदन लौटने की कथा है। इस उपन्यास में एक ओर जहाँ मुख्य रूप से वैश्विक स्तर पर स्वामी जी का सन्देश फैलता है वहीं दूसरी ओर आंदोलन के अन्तर्राष्ट्रीय होते जाने का चित्रण भी है। "प्रसार" किसी सम्प्रदाय विशेष के प्रचार तंत्र का प्रसार नहीं है। यह धर्म के वास्तविक रूप के अनुसंधान का प्रसार है, जो हमें उपासना पद्धतियों और संगठन तंत्रों से मुक्त कर देता है।

'साधना' खण्ड के माध्यम से ऐसा प्रतीत होता है कि एक नवीन भारत के निर्माण के लिए एक कठोर साधना और एकजूटता की ज़रुरत है इसी उद्देश्य से उन्होंने अपने गुरु श्रीरामकृष्ण परमहंस के निधन के बाद अपने सारे गुरुभाइयों को एकजूट करने हेतु एक मठ का निर्माण किया। आलोच्य खण्ड की शुरुआत श्रीरामकृष्ण परमहंस की समाधि भंग से लेकर अपनी तमाम सारी आध्यात्मिक उपलब्धियों की चर्चा करते हुए शुरु होती है। जिसमें ईश्वर कोटि के माध्यम से ठाकुर अपनी स्थिति समझाते हैं। ठाकुर श्री रामकृष्ण परमहंसदेव कहते हैं "वे ऊपर चढ़ते हैं फिर नीचे आ जाते हैं। वे ऊपर चढ़ भी सकते हैं और नीचे आ भी सकते हैं।" (पृष्ठ संख्या १ में यह बात उल्लेख है। भाग २ साधना)

नरेन्द्र कोहली के उपन्यास 'तोड़ो कारा तोड़ो' को केन्द्र में रखकर उसमें निहित दार्शनिक व आध्यात्मिक चिंतन तथा उसकी प्रासंगिकता मेरा शोध का क्षेत्र रहा है।

✤ शोध का उद्देश्य -
(Purpose of Research)

हिन्दी साहित्य में जीवनीमूलक उपन्यासों की धारा के आधार पर नरेंद्र कोहली विरचित इस जीवनीमूलक उपन्यास के छह खण्डो में स्वामी विवेकानन्द का जीवन दर्शन और उसकी समकालीन प्रासंगिकता को दर्शाना इस शोध का उद्देश्य है। ये छह खण्ड इस समय के परिप्रेक्ष्य में समूचा मनुष्य समाज को नई दिशा दे सकते हैं, हिन्दी के विविध विद्वान तथा हिन्दी समाज समय समय पर महर्षि विवेकानन्द से प्रभावित रहे हैं और साहित्य की विविध विधाओं के जरिए उनकी दृष्टि व जीवन मूल्यों को व्यक्त करने का अथक प्रयास किया है। मानव चेतना को जगाने हेतु स्वामी विवेकानंद की वाणियाँ समग्र मानव समाज को निरन्तर ऊर्जा प्रदान करती रही हैं।भारतीय समाज व संस्कृति, आध्यात्मिक तथा बहुत्ववादी दार्शनिक चिंतन से समृद्ध है। कोहलीजी के इस जीवनीमूलक उपन्यास के छह खंडो पर शोध करना तथा इसकी प्रासंगिकता को स्थापित करना मेरा उद्देश्य है।

✤ इस क्षेत्र / विषय पर किए गए शोध कार्य -
(Existing Research in this Area)

मेरी जानकारी के अनुसार हिन्दी में नरेन्द्र कोहली जी के दूसरे उपन्यासों पर शोध कार्य हुए हैं, परन्तु स्वामी विवेकानन्द पर आधारित उनके जो उपन्यास हैं उस पर अब तक कोई भी शोध कार्य नहीं हुआ है।

✤ शोध का अनोखापन और उसकी भिन्नता -
(What is new ? / How is it different ?)

स्वामी विवेकानन्द के जीवन व चिंतन तथा व्यक्तित्व के विविध आयामों को उपन्यासकार नरेन्द्र कोहली ने "तोड़ो कारा तोड़ो" के छह खंडो में दर्शाने का प्रयास किया है। जीवनीमूलक उपन्यासों में इस बोध की गहनता और विस्तार पर विचार दूसरे उपन्यासों की तुलना में अनोखा है।

✤ शोध प्रविधि -
(Methodology of Research)

मैंने इस शोध हेतु आलोचनात्मक प्रविधि को अपनाया है। आलोचना करते समय साहित्य, दर्शन, इतिहास आदि विधाओं में दिए गए प्रामाणिक तथ्य एवं दृष्टिकोण रह सकता है।

✤ शोध के संभावित परिणाम -
(Hypothetical outcome of the research)

स्वामी विवेकानन्द ने भक्ति योग के साथ-साथ कर्म योग को भी महत्व दिया है इसकी एक सामान्य धारणा तैयार हो सकती है। आलोच्य उपन्यास में नरेन्द्र कोहली की यह विशेषता देखने में आती है कि उन्होंने विवेकानन्द के जीवन दर्शन के विविध आयामों को दर्शाने का प्रयास किया है। उन्हें एक निर्माता, साधक, परिव्राजक, प्रसारक आदि के रूप में दर्शाया है। वे वास्तव में एक निष्ठावान गुरुभक्त थे। निष्ठावान गुरु भक्त का उदाहरण "तोड़ो कारा तोड़ो" उपन्यास के "साधना" नामक खंड जो कि "तोड़ो कारा तोड़ो" उपन्यास श्रृंखला का दूसरा भाग है, उसमें देखने को मिलता है। जब रामचन्द्र दत्त ने स्वामी विवेकानन्द से कहा "तुम नौकरी छोड़ दोगे ? रामचन्द्र दत्त को चिंता हो रही थी। रामचन्द्र दत्त ने आगे कहा इतनी कठिनाई से मिली नौकरी छोड़ दोगे ? नौकरी क्या रोज रोज मिलती है ?" उत्तर में विवेकानन्द ने जो कहा वह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। "सच है राम दादा ! बड़े प्रयत्न से बहुत दिनों के बाद नौकरी मिली है। ... किन्तु ठाकुर क्या रोज रोज मिलते हैं? (पृष्ठ संख्या १०९) बहुत्ववादी चिन्तन का एक प्रभाव पड़ सकता है। द्वैतवाद ब्रह्म और जगत दोनों को सत्य मानता है। अद्वैतवाद ब्रह्म को सत्य और जगत को मिथ्या मानता है। विशिष्टा द्वैतवाद का मानना है कि ब्रह्म सगुण और सविशेष है।

✤ शोध की सामाजिक और शैक्षणिक प्रासंगिकता -
(Social / Academic relevance of the research)

स्वामी विवेकानन्दजी का मानना था पहले अपने देश को जानो, अपने आप को जानो। स्वामी विवेकानन्द की यह विचारधारा मनुष्य के मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डालती है, तथा उन्हें विचार करने पर मजबूर कर देती है। इसी तरह स्वामीजी के अनुसार दृढ़ शरीर, दृढ़ मन अपने समाज व संस्कृति से गहरा परिचय तथा विचार शैक्षणिक तथा सामाजिक जगत को भी प्रभावित करता है। विवेकानन्द के जीवन दर्शन से भारतीय समाज व संस्कृति के सन्दर्भ में उसकी प्रासंगिकता सम्बन्धी स्थापनाओं का अन्वेषण मेरे शोध का संभावित परिणाम हो सकता है

✤ सम्भाव्य अध्यायीकरण -
(Tentative Chapterization)

अध्याय १. भारतीय अध्यात्म व दशर्न परपंरा

i) भारतीय अध्यात्म व दशर्न की अवधारणा

ii) दर्शन के विविध रूप और अध्यात्म का स्वरुप

iii) भारतीय दर्शन परपंरा में विवेकानन्द का चिन्तन

अध्याय २. हिन्दी जीवनी मूलक कथा साहित्य और आध्यात्मिक दर्शन

i) हिन्दी आध्यात्मिक साहित्य का परिचय

ii) हिन्दी जीवनी मूलक उपन्यास का स्वरुप

iii) हिन्दी जीवनी मूलक उपन्यास और अध्यात्म

अध्याय ३. नरेन्द्र कोहली का कथा साहित्य

i) नरेन्द्र कोहली के कथा साहित्य में पौराणिक और आध्यात्मिक प्रसंग

ii) तोड़ो कारा तोड़ो में स्वामी विवेकानन्द का व्यक्तित्वान्तरण

iii) तोड़ो कारा तोड़ो में जीवन दर्शन समाज व संस्कृति

अध्याय ४. तोड़ो - कारा तोड़ो उपन्यास में आध्यात्मिकता और समकाल

i) तोड़ो - कारा तोड़ो में साधना पक्ष

ii) तोड़ो - कारा तोड़ो में निर्देश, निर्माण और समकाल का परिप्रेक्ष्य

iii) तोड़ो - कारा तोड़ो में प्रासंगिकता

अध्याय ५. तोड़ो - कारा तोड़ो : शिल्परूप

i) जीवनी मूलक उपन्यास की शैली

ii) तोड़ो - कारा तोड़ो में भाव और शिल्प

आधारभूत / मूल सन्दर्भ सामग्री
(Basic reference material)

१. तोड़ो कारा तोड़ो- १ 'निर्माण' (औपन्यासिक जीवनी)

© नरेंद्र कोहली लेखक - नरेंद्र कोहली

प्रकाशक - किताबघर प्रकाशन

४८५५-५६/२४, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली - ११०००२

पहला पेपरबैक संस्करण २००२

बारहवाँ पेपरबैक संस्करण २०१७

आवरण सतीश राय

मुद्रक - बी के ऑफसेट

नवीन शाहदरा, दिल्ली - ११००३२

२ . तोड़ो कारा तोड़ो -२ 'साधना' (औपन्यासिक जीवनी)

© नरेंद्र कोहली लेखक - नरेंद्र कोहली

प्रकाशक - किताबघर प्रकाशन

४८५५-५६/२४, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली - ११०००२

पहला पेपरबैक संस्करण २००२

ग्यारहवाँ पेपरबैक संस्करण २०१५

आवरण सतीश राय

मुद्रक - बी के ऑफसेट

नवीन शाहदरा, दिल्ली - ११००३२

३. तोड़ो कारा तोड़ो -३ 'परिव्राजक' (औपन्यासिक जीवनी)

© नरेंद्र कोहली लेखक - नरेंद्र कोहली

प्रकाशक - किताबघर प्रकाशन, ४८५५-५६/२४, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली - ११०००२

दसवाँ पेपरबैक संस्करण २०१८

आवरण सतीश राय

मुद्रक - बी के ऑफसेट

नवीन शाहदरा, दिल्ली - ११००३२

४. तोड़ो कारा तोड़ो -४ ‘निर्देश’ (औपन्यासिक जीवनी)

© नरेंद्र कोहली लेखक - नरेंद्र कोहली

प्रकाशक - किताबघर प्रकाशन

४८५५-५६/२४, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली - ११०००२

सातवाँ पेपरबैक संस्करण २०१८

आवरण सतीश राय

मुद्रक - बी के ऑफसेट

नवीन शाहदरा, दिल्ली - ११००३२

५. तोड़ो कारा तोड़ो -५ ‘सन्देश’ (औपन्यासिक जीवनी)

© नरेंद्र कोहली लेखक - नरेंद्र कोहली

प्रकाशक - किताबघर प्रकाशन

४८५५-५६/२४, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली - ११०००२

पाँचवाँ पेपरबैक संस्करण २०१४

छठाँ पेपरबैक संस्करण २०१५

आवरण सतीश राय

मुद्रक - बी के ऑफसेट, नवीन शाहदरा, दिल्ली - ११००३२

६. तोड़ो कारा तोड़ो -६ ‘प्रसार’ (औपन्यासिक जीवनी)

© नरेंद्र कोहली लेखक - नरेंद्र कोहली

प्रकाशक - किताबघर प्रकाशन

४८५५-५६/२४, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली - ११०००२

चतुर्थ पेपरबैक संस्करण २०१५

आवरण सतीश राय

मुद्रक - बी के ऑफसेट

नवीन शाहदरा, दिल्ली - ११००३२

सहायक सन्दर्भ सामग्री
(Secondary reference material)

गूगल से ली गई सूचनाएँ और यू ट्यूब में कोहली जी के व्याख्यान

१. “न भूतो न भविष्यति”

लेखक - नरेंद्र कोहली

वाणी प्रकाशन

४६९५, २१-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली ११०००२

© नरेंद्र कोहली, संस्करण २०१३

आवृत्ति संस्करण २०१४ व्यास सम्मान २०१२ से सम्मानित कृति

२. “विश्व शांति का सन्देश”

लेखक - स्वामी विवेकानन्द

प्रकाशक - भारती प्रकाशन, ५१८ / ६ बी विश्वासनगर

शाहदरा दिल्ली -११००३२

संस्करण - १९९९

मुद्रक - एस एन प्रिंटर्स, नयी दिल्ली

आवरण सौजन्य सत्यसेवक मुख़र्जी ।

३. “স্বামী বিবেকানন্দের আর্থিক চিন্তা” (स्वामी विवेकनन्देर आर्थिक चिंता)

प्रकाशक - स्वामी सुपर्णानन्द

संपादक - रामकृष्ण मिशन इंस्टिट्यूट ऑफ कल्चर, गोलपार्क, कोलकाता

प्रथम प्रकाशन - मार्च २०१४

४. “স্বামী বিবেকানন্দের সমাজ চিন্তা ও রাষ্ট্র ভাবনা” (स्वामी विवेकनन्देर समाज चिंता ओ राष्ट्र भावना)

लेखक - आशीष कुमार बसु

प्रथम प्रकाशन - २२/०५/२०१६

मेमारी वर्धमान से प्रकाशित

५. “The life of Swami Vivekananda” - By his Eastern and Western disciples, published by Swami Tattvavinananda, Adhyaksha, Advaitia Ashrama Mayavati, Champavat, Uttarakhand, Himalayas from its publication department, Kolkata - 700014.

६. "शक्तिदायी विचार"

लेखक - स्वामी विवेकानन्द

प्रकाशक - स्वामी ब्रम्हास्थानन्द

अध्यक्ष - रामकृष्ण मठ, रामकृष्ण आश्रम मार्ग, धन्तोली, नागपुर - ४४००१२

मुद्रक - अविनाश फाइन आर्ट्, नागपुर

अनुवादक - श्री कृष्णलाल हंस साहित्यरत्न

७. "विवेकानन्द चरित"

लेखक - सत्येन्द्रनाथ मजुमदार

प्रकाशक - स्वामी ब्रम्हास्थानन्द

अध्यक्ष - रामकृष्ण मठ, रामकृष्ण आश्रम मार्ग, धन्तोली, नागपुर - ४४००१२

अनुवादक - पं० मोहिनीमोहन गोस्वामी, भूतपूर्व संपादक - हिन्दी दैनिक लोकमत नागपुर

प्रथम संस्करण १९४८

बीसवाँ पुनर्मुद्रण संस्करण १०/०१/२००७

८. "भारत में विवेकानन्द"

स्वामी विवेकानन्द

अनुवादक - पं० सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

प्रकाशक - स्वामी भास्करेश्वरानन्द, अध्यक्ष, श्री रामकृष्ण आश्रम, धंतोली, नागपुर (द्वितीय संस्करण)

९. THE MASTER AS I SAW HIM

Writer - Sister Nibedita,

Published by - Swami Vishwanathanananda Udbodhan office, 1, Udbodhon Lane, Bagbazar, Kolkata - 700003,

Ninth edition - 12/11/1962,

35th Reprint, August 2015,

Printed by - Trio Process, Kolkata -700014.

१०. स्वामी विवेकानन्द का समाज दर्शन

लेखिका - सुनीता भटनागर

प्रथम संस्करण २०१३,

© लेखिका

प्रकाशक - डॉ राधेश्याम शुक्ल एम ए पी एच डी, प्रतिभा प्रकाशन

७२५९/२३, अजेंद्र मार्किट, प्रेमनगर, शक्तिनगर, दिल्ली - ११०००७। मुद्रक - एस के ऑफसेट, दिलशाद गॉर्डन, दिल्ली

११. मेरा भारत अमर भारत

लेखक - स्वामी विवेकानन्द, प्रकाशक - स्वामी ब्रम्हस्थानंद

अध्यक्ष, रामकृष्ण मठ, रामकृष्ण आश्रम मार्ग, धंतोली, नागपुर - ४४०४१२

१२. বীর সন্যাসী বিবেকানন্দ (वीर सन्यासी विवेकानन्द)

लेखक - मोहित लाल मजूमदार

संपादक - वारिद वरण घोष

पारुल प्रकाशनी प्राइवेट लिमिटेड, ८/३ चिन्तामणि दास लेन कोलकाता - ७००००९

प्रथम पारुल संस्करण २०१३

१३. The Universal Message of Swami Vivekananda

Published by - Swami Suchitananda, Chairman Central Executive Committee,

At the 150th birth anniversary of Swami Vivekanand, Ramkrishna Mission, Belur Math, Dist-Howrah, West Bengal - 711202.

Edited by - Swami Bhajananda and Swami Mahabodhananda

1st Edition - January 2016, printed in India at Trio Process Kolkata - 700014.

१४. कर्मयोग

लेखक - स्वामी विवेकानन्द

प्रकाशक - प्रभात पेपर बैक्स, ४/१९ आसफ अली नई दिल्ली -११०००२

संस्करण - २०१८

१५. भारतीय दर्शन : सरल परिचय

लेखक - देवीप्रसाद चट्टोपाध्याय

प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्रा ० ली ०, १-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

© राजकमल प्रकाशक प्रा ० ली ०

पहला संस्करण : १९६५

तीसरी आबृत्ति : २०१०

१६. भक्ति योग

लेखक : स्वामी विवेकानन्द

अनुवादक : डॉ ० विद्याभाष्कर शुक्ल

प्रकाशक : स्वामी वयोमरूपानन्द, अध्यक्ष रामकृष्ण मठ, धंतोली, नागपुर-४४००१२

१७. स्वामी विवेकानंद का समाज दर्शन

लेखिका : डॉ ० सुनीता भटनागर

Published by Dr. Radheshyam Shukla Pratibha Prakashan
(Oriental Publishers & Booksellers) 7259/23, Ajendra Market,
Prem Nagar, Shakti Nagar, Delhi-110007

१८. ज्ञानयोग (ज्ञान योग)

प्रकाशक : स्वामी विश्वनाथानन्द,

उदबोधन कार्यालय, १ उदबोधन लेन, बागबाजार, कोलकाता - ७००००३

आठवाँ संस्करण : १७/०२/१९६३

छियालीसवाँ पुनर्मुद्रण : दिसम्बर २०१५

१९. Thoughts to Inspire

Writer : Swami Vivekanand
Compiled and Edited by the Imprint Amazing Reads

२०. Swami Vivekananda : Personality & Philosophy

Writer : Ranjit Singh G. Rathod
Published by : Swastik Publications, New Delhi - 110002
First Published : 2016

२१. पत्रिकाएँ : विवेकानन्द सम्बन्धित

१. विवेक ज्योति, रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द आश्रम रायपुर छत्तीसगढ़, २०१६, २०१७, २०१८, २०१९

२. अमृतम, प्रकाशक : स्वामी गणदेवानन्द, अध्यक्ष रामकृष्ण मठ, चंडीपुर, पूर्व मेदिनीपुर - ७२१६५९, शुभप्रकाश, ८ दिसंबर २०१६

✤ सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

(List of Bibliography)

१. "विश्व शान्ति का सन्देश" लेखक - स्वामी विवेकानन्द

२. "স্বামী বিবেকানন্দের আর্থিক চিন্তা" (स्वामी विवेकानन्देर आर्थिक चिन्ता) प्रकाशक - स्वामी सुपर्णानन्द

३. "The life of Swami Vivekananda" -

By his Eastern and Western disciples, published by Swami Tattvavinananda, Adhyaksha, Advaitia Ashrama Mayavati, Champavat, Uttarakhand, Himalayas from its publication department, Kolkata - 700014.

४. "স্বামী বিবেকানন্দের সমাজ চিন্তা ও রাষ্ট্র ভাবনা" (स्वामी विवेकानन्देर समाज चिंता ओ राष्ट्र भाबना) लेखक - आशीष कुमार बसु

५. "शक्तिदायी विचार", लेखक - स्वामी विवेकानन्द

६. "विवेकानन्द चरित", लेखक - सत्येन्द्रनाथ मजुमदार

७. "भारत में विवेकानन्द", लेखक - स्वामी विवेकानन्द, अनुवादक - पं ० सूयर्कांत त्रिपाठी निराला

८. THE MASTER AS I SAW HIM, Writer - Sister Nivedita

९. বীর সন্যাসী বিবেকানন্দ (वीर सन्यासी विवेकानन्द) लेखक - मोहितलाल मजुमदार

१०. The Universal Message of Swami Vivekananda

Published by - Swami Suchitananda, Chairman Central Executive Committee, At the 150th birth anniversary of Swami Vivekanand, Ramkrishna Mission, Belur Math, Dist- Howrah, West Bengal - 711202. Edited by - Swami Bhajananda and Swami Mahabodhananda, 1st Edition - January 2016, printed in India at Trio Process Kolkata - 700014.

११. मेरा भारत अमर भारत, लेखक - स्वामी विवेकानन्द